12
दलीय व्यवस्थाएँ : एक-दल, दो-दल तथा बहु-दल व्यवस्थाएँ
(Party Systems : One-Party, Two-Party and Multi-Party Systems)

लोकतंत्र के लिए राजनीतिक दल अपरिहार्य है। (मार्टिन लिपसर)। राजनीतिक दल व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें एक समान राजनीतिक विचार रखने वाले लोग, दलों में संघटित हो जाते हैं ताकि वे लोगों की तरफ से उन पर शासन करने तथा उनकी तरफ से बोलने के लिए चुनावों में प्रतिस्पर्धा कर सकें। गियावानी सरटोरी (Giovanni Sartori) ने यह दावा किया है कि प्रतिनिधित्व केवल दलों के माध्यम तथा उनके द्वारा ही संभव है। एक दल व्यवस्था केवल ऐसे देशों में पाई जाती है जो विशुद्ध राजनीतिक संघर्ष नहीं होने देते। बहु-दल तथा दो-दल व्यवस्थाएं बहुत समाजों में संभव है और यहां राजनीतिक संघर्ष को, संघटित करने दिया जाता है तथा यहां ही लोकतंत्र के होने का संकेत मिलता है। बहुल दलीय व्यवस्थाएं अल्पसंख्यक दृष्टिकोण को अधिक प्रतिनिधित्व देती है और प्राय: ऐसी व्यवस्थाओं में अनेक अल्पसंख्यक दलों को मिलकर गठबंधन द्वारा शासकीय बहुमत को प्राप्त करना पड़ता है जो प्राय: दुर्बल होता है और अस्थिरता की संभावना बनाए रखता है।

लोकतंत्र में दल पद्धति की प्रकृति
(Nature of Party System in Democracy)

लोकतंत्रों में दल पद्धति के स्वरूप का निम्नलिखित आधारों पर अध्ययन किया जा सकता है–

जनता की सहमति से शासन (Government by the Consent of the People)

उदार लोकतांत्रिक समाजों की मौलिक विशेषता यह है कि यहां शासन जन-साधारण की सहमति पर आधारित होता है। जनता निर्वाचन के माध्यम से जिस विशिष्ट राजनीतिक वर्ग के हाथों में शासन सौंपती है वह निश्चित समय तक शासन की बागडोर संभालता है और विरोधी दावेदार राजनीतिक दलों के कड़े मुकाबले के बीच पुन: शासन करने की अनुमति जनता से प्राप्त करता है। एक निश्चित समय के पश्चात् जनता को फिर से अपने शासकों को छांटने का अवसर मिलता है। निर्वाचन के माध्यम से वह पिछले शासकों के कार्यों का मूल्यांकन करती है और तब स्वेच्छा से किसी एक राजनीतिक पक्ष के हाथों में शासन सौंपती है। इस प्रकार जनता का सर्वाधिक समर्थन प्राप्त करने वाला राजनीतिक दल राजनीतिक शक्ति प्राप्त करता है तथा शासक दल के रूप में

जनता तथा विरोधी दलों की तीखी दृष्टि के नीचे काम करता है। शासक दल सदा जन भावना का आदर करता है और जनहित के लिए अधिकाधिक कार्य करता है जिससे आगे आने वाले चुनावों में जनता पुनः शासन की बागडोर उसके हाथों में सौंप दे। लोकतांत्रिक शासनों में जनता को यह अधिकार होता है कि वह अलोकप्रिय दल के हाथों से शासन लेकर दूसरे दल के हाथों में सौंप दे। इस प्रकार उदार लोकतंत्रों में जनता राजनीतिक दलों के माध्यम से शासन में भागीदार होती है। यहां की मौलिक विशेषता सांविधानिक उपायों का अविलम्बन तथा राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से शासन पर अधिकार करना है जिसमें जनता की सहमति सम्मिलित होती है। लोकतंत्रीय समाजों में दलीय भावना तथा प्रतियोगिता प्रक्रिया के अभिन्न अंग होते हैं क्योंकि चुनाव जीतने का उद्देश्य शासन पर नियंत्रण स्थापित करना होता है, (Rodee, Anderson, and Christol, *Introduction to Political Science, Mc. GrawHill, New York*, 1967, p. 485)।

(क) विद्रोहों का स्थानापन्न (Substitute For Revolutions)

जिन देशों में अधिनायकवादी शासन होता है वहां राजनीतिक दलों को न विकसित होने दिया जाता है और न उन्हें मान्यता प्राप्त होती है। इन देशों में सत्ता सामान्यतः सेना या किसी एक दल या वर्ग के रूप में गठित फासिस्ट अथवा साम्यवादी दल आदि के हाथों में केन्द्रित होती है जो किसी विरोधी प्रतिस्पर्धा विचारधारा पर आधारित दूसरे राजनीतिक दल को पनपने नहीं देता। आधुनिक संसार के किसी भी साम्यवादी शासन वाले अथवा सैनिक शासन वाले देश में प्रतिस्पर्धी विरोधी दल या विचारधारा को विकसित होने का अवसर नहीं दिया जाता। वहां के शासकों को विरोधी दलों के उदय से अपनी सत्ता को खतरा दिखाई देता है। अतः इन अधिनायकवादी देशों में सत्ता का हस्तांतरण सांविधानिक साधनों की अनुपस्थिति में विद्रोहों व हिंसक उपायों से होता है। ठीक इसके विपरीत उदार लोकतंत्रों में विभिन्न राजनीतिक दल जन-भावनाओं को अभिव्यक्ति करते हैं और सत्ता के लिए संघर्ष को राजनीतिक संघर्ष का रूप देकर चुनाव के माध्यम से सत्ता का हस्तांतरण शांतिपूर्ण तरीके से करते हैं। इससे हिंसक विद्रोहों की संभावना समाप्त हो जाती है। **ऑडीगार्ड** (Odegard) तथा **हेम्स** (Helms) ने **'दलीय राजनीति को विद्रोहों का स्थानापन्न'** (Party Politics thus becomes a substitute for revolution) माना है (Odegard, P. H. and Helms, Allen, *American Politics - A study in Political Dynamics*, 1947, p. 2)।

राजनीतिक दलों के उदय व विकास की कहानी से यह सिद्ध हो जाता है कि उनका उदय अत्याचारी शासनों का विरोध करने के लिए हुआ और उन्होंने उन अत्याचारी शासनों को समाप्त करके जनसहमति से चलने वाले शासनों का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने अत्याचारी व अधिनायकवादी शासनों के स्थान पर प्रतिनिधि शासनों को सफलतापूर्वक स्थापित किया है। आज संसार भर में दलीय शासनों को अत्याचारी शासनों के स्थान पर मान्यता प्राप्त है। **विलियम गुडमैन** ने कहा है कि राजनीतिक दलों का उदय अत्याचारी शासन के बदले में शासन प्राप्त करने की मांग के परिणामस्वरूप हुआ था- राजनीतिक दलों को अत्याचारी शासन के बदले में एक स्थायी क्रियाशील व्यवस्था के विकल्प के रूप में सर्वत्र मान्यता प्राप्त हो गई है। अब तक विकसित विकल्पों में वे सर्वाधिक समझ में आने वाला भरोसेमंद विकल्प है, (They were in response to the challenge of finding alternatives to tyranny...Parties have consistently and universally been accepted as they are tenable alternative, as a working system to tyranny. They are the only understandable and dependable alternative so far developed.—Goodman, William, *The Two-Party System in the United States*, 1956 p. 6)।

(ख) समाज को राज्य के साथ जोड़ने वाला पुल है
(Bridge joining the Society with the State)

आधुनिक राजनीतिक प्रक्रिया में राजनीतिक दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक ओर वे विभिन्न सामाजिक विचारों, दृष्टिकोणों व हितों को अभिव्यक्ति करते हैं और दूसरी ओर अपने निश्चित राजनीतिक विचारों, सिद्धांतों व कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए चुनावों में भाग लेते हैं। चुनावों में वे अधिकाधिक जनसहमति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं इस प्रकार बहुमत प्राप्त कर लेने वाला दल सत्ता पर अधिकार कर लेता है और अपनी नीतियों व कार्यक्रमों को कार्यान्वित करता है और अल्पमत में रहने वाला दल विरोधी दल की भूमिका निभाता है। इस प्रकार राजनीतिक दल दोहरा काम करते हैं। एक ओर वे सामाजिक भावनाओं को अभिव्यक्ति करते हैं और दूसरी ओर शासन पर अधिकार करके इन सामाजिक भावनाओं को पूर्ति करने का प्रयास करते हैं। **बार्कर** महोदय ने कहा है कि राजनीतिक दल एक ऐसा पुल है जिसका एक सिरा समाज पर और दूसरा राज्य पर टिका हुआ है। इसी बात को दूसरे शब्दों में भी व्यक्त किया जा सकता है अर्थात दल एक वाहक-नली या जल द्वार है जिसके द्वारा सामाजिक विचार व जनभावना रूपी जल को राजनीतिक मशीनरी की ओर लाया जाता है और उसके पहिए को घुमाया जाता है, (It is we may say, a bridge, which rests at the one end on society and at the other on the state. It is, we may say, in another metaphor, a conduit or sluice, by which the waters of social thought and discussion are brought the wheels of political machinery and set to turn those wheels.—Barker. E. *Reflections on Government*, 1967, p. 38-39)।

(ग) बहुमत का निर्माण तथा राजनीतिक शक्ति को लागू करना
(Formation of Majority and Implementation of Political Power)

उदार राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक दलों के महत्व को एक दूसरे प्रकार से भी व्यक्त किया जा सकता है। राजनीतिक दल चुनावों के माध्यम से जनता के ऐसे बहुमत का निर्माण करते हैं जो शासन शक्ति पर अधिकार करता है तथा उसके माध्यम से शासन तंत्र को गति प्रदान करता है। लोकतंत्र का आदर्श जनता को शासन में इस प्रकार भागीदार बनाता है जिससे शासन में उसकी रुचि उत्पन्न हो और वह अपनी भावनाओं, इच्छाओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शासकों का निर्वाचन कर सके। इसीलिए कहा गया है कि राजनीतिक दल वह इंजन है जिसके द्वारा बहुमत निर्मित किए जाते हैं और राजनीतिक शक्ति को कार्यान्वित किया जाता है, (Rodee, Anderson and Christol—The Political party is the engine by which majorities are produced and political power implemented)।

यद्यपि हिटलर व मुसोलिनी जैसी फासिस्टों ने अपनी अधिनायकवादी प्रवृत्ति के अनुसार जर्मनी व इटली में जो शासन स्थापित किए उनके लिए भी उन्होंने नाजी व फासिस्ट दलों को माध्यम बनाया किंतु उन्होंने इन देशों में एक दल के अधिनायकवाद को स्थापित करके जनसहमति द्वारा शासन के सिद्धांतों को अस्वीकार कर दिया। इसी प्रकार साम्यवादी देशों में भी साम्यवादी दल

यद्यपि निरंकुश अत्याचारी शासन के विरुद्ध जनशक्ति के रूप में उदित हुआ किंतु सत्ता हथियाकर उसने अन्य राजनीतिक दृष्टिकोणों के उदय व विकास पर प्रतिबंध लगा दिया। परिणामस्वरूप रूस, चीन व अनेक पूर्वी यूरोपीय देशों आदि में खुली राजनीतिक प्रतियोगिता के द्वारा जनसहमति पर आधारित लोकतंत्रीय शासन के स्थान पर एक दल का अधिनायकवाद स्थापित हो गया है और यहां सत्ता परिवर्तन के समय हिंसक क्रांतियों की अधिक संभावना रहती है। **जीन ब्लोंडेल** का कहना है कि उक्त सत्ताओं के नेताओं ने पहले अचानक और बाद में जानबूझकर एक दलीय व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया जिससे वे एक ऐसा नया शासन आरोपित कर सकें जो सैनिक या नौकरशाही द्वारा स्थापित राजनीतिक या प्रशासनिक संगठनों से भी अधिक प्रभावकारी हो. (Firstly by accident, and later consciously, leaders of such regime used the single party system as a means of achieveing the aims of imposition of new regime more effectively than deemed possible by other political or administrative structures, such as military or the bureaucracy.—Blondel, Jean, *An Introduction to Comparative Government*, 1969, p. 99)।

इस प्रकार अधिनायकवादी संगठनों में चाहे फिर उसका स्वरूप जैसा भी क्यों न हो दल पद्धति के मौलिक दर्शन को कोई स्थान नहीं है। वहां जनता के नाम पर एक दल के शीर्षस्थ नेताओं का अधिनायकवाद स्थापित होता है और वहां जनता को स्वतंत्र वातावरण में अपने शासकों को चुनने का अवसर नहीं दिया जाता। अतः दल पद्धति मूलतः उदार लोकतंत्रीय व्यवस्था है।

I. एक-दल व्यवस्था
(One-Party System)

1. एक दल द्वारा सरकार (Government by One Party)

एक दल द्वारा शासन वह व्यवस्था है जिसमें राज्य केवल विचारधारा तथा एक नेता को स्वीकार करता है। एक दलीय राज्य की स्थापना के समय द्वैधवृत्ति (Ambivalence) हुई थी कि किस संस्था को प्रधानता दी जाए- दल को या विधानचालिका को। एक दल राज्य 'एक राष्ट्र, एक दल, एक नेता' जैसा तरीका व आदर्श रखता है। ऐसी राजनीतिक व्यवस्था में केवल एक ही विशेष राजनीतिक दल जीवित रह सकता है और वह है शासकीय दल। इस विशेष राजनीतिक दल का सदस्य सामान्य चुनाव में अपना वर्चस्व स्थापित कर लेता है। मौरिस डुवर्गर राजनीतिक दल को 'एक राजनीतिक व्यवस्था में संगठित गुट जिसका उद्देश्य शक्ति प्राप्ति व प्रयोग' के रूप में परिभाषित करते हैं ("....group organised for the purpose of achieving and exercising power within a Political System..." ---Maurice Duverger)। बीसवीं शताब्दी में, एक दलीय राज्य अनेक देशों में स्थापित हुए थे। यहां हम विभिन्न प्रकार के एक दलीय राज्य, जैसे फासीवाद तथा मार्क्सवादी राजनीतिक व्यवस्थाएं, निरंकुशवादी (Autocratic) राजनीतिक व्यवस्थाएं, एक दलीय प्रधानता, आदि का अध्ययन करेंगे।

(क) अधिनायकवादी व्यवस्थाएं (Totalitarian Systems)

(1) फासीवाद तथा नाज़ीवाद राजनीतिक व्यवस्थाएं (Fascist and Nazist Political Systems)—फासीवाद का उदय इटली में 1919 में हुआ तथा फासीवाद दल राज्य 1922 में बेनितो मुसोलिनी (Benito Mussolini) के नेतृत्व में स्थापित हुआ था तथा नाज़ी राज्य की

स्थापना 1933 में हिटलर के द्वारा जर्मनी में हुई थी। यद्यपि दोनों देशों में वर्साय संधि से असंतुष्टि तथा अविश्वास से एक दलीय राज्य उत्पन्न हुए, परंतु दोनों देशों में परिस्थितियां भिन्न थीं और अपनी भूतपूर्व सरकार के प्रति लोगों में असंतुष्टि के कारण भी भिन्न थे। इन दोनों नेताओं ने लोगों को यह आश्वासन दिया कि अगर लोगों ने उन्हें शक्ति सौंपी तो वे देश को समृद्धि तथा स्वस्थ राष्ट्रवाद प्रदान करेंगे, तब लोगों ने उन्हें पूर्ण सहयोग दिया और उन दोनों ने धूर्तता तथा धोखे की राजनीति द्वारा राजनीतिक शक्ति हथिया ली। हिटलर पूर्ण रूप से मार्क्सवादी विचारधारा के विरुद्ध था। उसने 'आर्य जाति की श्रेष्ठता' रूपी नीति के आधार पर शासन किया। एक जाति का दूसरी जाति पर प्रभुत्व न केवल समाजवाद विरोधी है परंतु लोकतंत्र के विरुद्ध भी है। मुसोलिनी ने भी, हीगल के दर्शनशास्त्र को स्वीकार करते हुए न केवल समाजवाद का विरोध किया परंतु साम्यवाद को 'लाल-खतरा' (Red menace) के नाम से भी संबोधित किया।

(i) **साम्यवादी राजनीतिक व्यवस्थाएं** (Communist Political System)—पूर्व सोवियत संघ एक दलीय राज्य का महत्वपूर्ण उदाहरण है। रूस के नागरिक ज़ारशाही के अत्याचारी व दिशाहीन शासन से असंतुष्ट थे। इसीलिए वे वी.आई.लेनिन के बोल्शाविक (bolshevik) दल (जो आगे चलकर साम्यवादी दल कहलाया) की कठपुतली बने रहे तथा उन्हें ज़ारशाही से सत्ता छीनने में सहयोग दिया। साम्यवादी दल का निर्माण मार्क्सवादी चिन्तन पर आधारित था। आगे चलकर इस विचारधारा को चीन (जन गणतंत्रीय चीन) क्यूबा, वियतनाम, गिन्नी, मेडागास्कर, तनजानिया तथा अनेक अन्य उत्तरीय यूरोप, अफ्रीका व लेटिन अमेरिका के राज्यों ने भी अपनाया। इस प्रकार एक दलीय राज्य में सामान्यतः साम्यवादी दल, शासन तथा समाज के सभी पहलुओं को नियंत्रित करता है। संवैधानिक रूप से केवल इसी दल को मान्यता प्राप्त होने के कारण, किसी अन्य दल को जन्म देना असंवैधानिक व गैर कानूनी है। इस प्रकार अन्य राजनीतिक दलों के अभाव में, एक दल द्वारा नियंत्रित सरकार का विरोध संवैधानिक रूप से समाप्त हो जाता है तथा किसी अन्य विचारधारा को भी सहन नहीं किया जाता है।

चीन में साम्यवादी दल की भूमिका (Role of Communist Party in China)

नीचे साम्यवादी दल की भूमिका के विभिन्न पक्षों का तथा दल का राज्य से संबंध का अध्ययन किया गया है—

(क) जनता में क्रांतिकारी भावना पैदा करना तथा उसको निरंतर वृद्धि करना (To create and develop revolutionary spirit in the people)—साम्यवादी दल का उदय मार्क्सवाद के आदर्श को चीन में कार्यान्वित करने के लिए हुआ था। इसी कारण उसका मुख्य लक्ष्य जनता में क्रांतिकारी भावना पैदा करना तथा उसको निरंतर बढ़ाते रहना है। साम्यवादी दल के इसी प्रयास के परिणामस्वरूप चीन में पुरानी व्यवस्था के विरुद्ध 1949 में सशस्त्र हिंसक क्रांति संभव हो सकी। परिणामस्वरूप दल ने शासन सत्ता को, कृषकों व मजदूरों के संगठित अग्रिम दल के रूप में स्वयं संभाल लिया। इस क्रांतिकारी भावना को जगाकर तथा बढ़ाते रहकर साम्यवादी दल ने विभिन्न चरणों में न केवल अपने विरोधियों को नष्ट किया बल्कि समाज पर अपना कड़ा नियंत्रण स्थापित कर लिया। कृषि तथा उद्योगों पर भी शासन का नियंत्रण स्थापित हो गया। पूर्व व्यवस्था का विरोध करने वालों के विरुद्ध संघर्ष करके उन्हें नष्ट किया गया और क्रांति को जारी के विकास के मार्ग को प्रशस्त किया गया। आज भी वहां साम्यवादी दल इसी कार्य में संलग्न है।

(ख) जनता का मार्गदर्शन करना (Guiding the masses)—साम्यवादी दर्शन के अनुसार चीन का साम्यवादी दल जनता को पुरानी गली-सड़ी व्यवस्था को नष्ट करके नई

समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने के लिए मार्गदर्शन करता है। उसने जनता के सहयोग से क्रांति को सफल बनाया है तथा नई सामाजिक व्यवस्था को स्थापित किया है। साम्यवादी दल श्रमिकों का अग्रिम दल है जिसमें बुद्धिवादी कुशल नेतृत्व उनके हितों की सुरक्षा के लिए उनका मार्ग प्रशस्त करता है। साम्यवादी दल मार्क्सवाद के ज्ञान के कारण तथा अपनी संगठनात्मक क्षमता के कारण जनता के हितों को भली प्रकार समझता है। इसी कारण कहा जाता है कि 'दल के हित वास्तव में जनता के हित होते हैं' तथा दल जनता को उसके हितों के संबंध में मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता है।

(ग) जन-संगठनों पर नियंत्रण रखना (Controlling the Mass Organisations)– साम्यवादी दल चीन का एकमात्र राजनीतिक दल है। वहां किसी दूसरे राजनीतिक दल के निर्माण की तो बात ही अलग है, स्वयं साम्यवादी दल में भी विचारों की भिन्नता को स्थान नहीं दिया जाता है। दल पर जिस वर्ग का प्रभुत्व होता है उसी वर्ग के विचार व कार्यक्रम दल के अधिकृत विचार व कार्यक्रम होते हैं। दल संपूर्ण समाज पर अपने प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए समाज के विभिन्न वर्गों को अपने-अपने वर्गों के संगठनों में संगठित होने के लिए प्रेरित करता है और इन संगठनों के महत्वपूर्ण पदों पर दलीय कार्यकर्ताओं को नियुक्त करके उन पर नियंत्रण स्थापित किए रहता है। युवकों, महिलाओं, कृषकों, श्रमिकों अन्य व्यवसायों आदि के अनेक संगठन चीन में विद्यमान है। जिन पर साम्यवादी दल का परोक्ष रूप में नियंत्रण है।

(घ) शासन पर नियंत्रण रखना (Controlling the Government)– चीन में 'सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद' (Dictatorship of the Proletariat) स्थापित है जिसे चीन में 'जनता का लोकतांत्रिक अधिनायकवाद' (People's Democratic Dictatorship) कहा जाता है। इस प्रकार चीन में सर्वहारा वर्ग के अग्रिम दल के रूप में साम्यवादी दल ने शासन पर अधिकार किया है। वहां दल के पदाधिकारी ही शासन, सेना व न्यायालय के महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित करते है। न केवल केन्द्रीय शासन बल्कि देश में विभिन्न स्तरों पर भी साम्यवादी दल के कार्यकर्ता शासन संभालते हैं। इतना होते हुए भी चीन का साम्यवादी दल स्वयं प्रशासनिक संस्था नहीं है बल्कि नेतृत्व प्रदान करने वाला अंग है जो राज्य संगठन द्वारा कार्यान्वित की जाने वाली नीतियों को तय करता है तथा इन नीतियों के कार्यान्वयन का निरीक्षण करता है, (The party, however, conceives of itself not as an administrative body but as a leadership organ, deciding policies to be implemented by the state structure and supervising the execution of these policies)। दल का शासन पर नियंत्रण इस बात से और अधिक स्पष्ट हो जाता है कि दल के प्रमुख नेता दल की बैठकों में नीति निर्धारित करते हैं और शासक के रूप में उन्हें कार्यान्वित करते हैं।

(ङ) दल वास्तविक अधिनायक है (Party is the real Dictator)–चीन में साम्यवादी दल का समाज के सभी पहलुओं पर प्रभुत्व स्थापित है। वहां जो 'सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद' स्थापित है वह वास्तव में 'साम्यवादी दल का अधिनायकवाद' है। शासन, सेना व न्यायालय पर उसका कठोर नियंत्रण स्थापित है। उसका आर्थिक सामाजिक व सांस्कृतिक आदि सभी पहलुओं पर नियंत्रण है तथा पारिवारिक व्यवस्था को इस प्रकार संशोधित किया गया है कि व्यक्ति पर दल की पकड़ अधिक मजबूत बन जाए।

दल के अधिनायकवाद का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि व्यक्ति स्वेच्छा से कुछ नहीं कर सकता। यदि उसका प्रयास तत्कालीन समाजवादी व्यवस्था से मेल नहीं खाता हो तो समाज का प्रत्येक पहलू समाजवादी परिधि के अंदर ही कार्य करता है। इतना ही नहीं, समाजवादी व्यवस्था क्या है

और समाजवादी कार्यक्रम क्या है? इसका निर्णय दल पर प्रभुत्व जमाए रखने वाला वर्ग करता है। इस प्रकार चीन में साम्यवादी दल पर जिस वर्ग का प्रभुत्व स्थापित हो जाता है सारे देश को उस वर्ग के नेतृत्व में आस्था व्यक्त करनी होती है अन्यथा संदेह मात्र उत्पन्न होने पर भी लोगों को घोर यातनाएं दी जाती है तथा संशोधनवादी कहकर उन्हें रास्ते से हटा दिया जाता है।

निरंकुशवादी व्यवस्थाएं (Autocratic Systems)

इस वर्ग (Category) में ऐसे देश आते हैं जिसमें न तो हिटलर या मुसोलिनी जैसा नेतृत्व होता है न लेनिन या स्टालिन के नेतृत्व वाला साम्यवादी दल ही होता है परंतु वहां नेता कुछ अन्य किस्म के तरीकों को अपनाकर राजनीतिक शक्ति को छीनकर नियंत्रित कर लेते हैं। प्रायः ये सैनिक पदाधिकारी होते हैं जो सैनिक शक्ति की मदद से सरकार को हड़प लेते हैं और पदाधिकारियों को आदेश देना प्रारंभ कर देते हैं। कुछ देशों में ये गैर सैनिकों वर्ग से संबंधित होते हैं। ऐसे निरंकुशवादी प्रणाली की उत्पत्ति पाकिस्तान, म्यन्मार, इरान, मिस्र, घाना, अलजीरिया, जाम्बिया, इराक आदि देशों में देखी जा सकती है।

प्रधानता दलीय व्यवस्थाएं (Dominant Party Systems)

इस व्यवस्था में न तो सैनिक लोग सत्ता को हथियाते हैं न ही कोई लेनिन की विचारधारा या हिटलर का व्यक्तित्व देश को प्रभावित या नियंत्रित करता है वरन् एक दल अपने परिश्रम द्वारा जन समुदाय के सामने इतना लोकप्रिय बन जाता है कि उसे देश की सत्ता पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए सारा रास्ता साफ मिल जाता है। इस प्रकार एक दलीय प्रधानता व्यवस्था वह राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें अनेक राजनीतिक दल तो होते हैं परंतु उनमें से एक दल को इतनी लोकप्रियता व जनता का सहयोग प्राप्त होता है कि सामान्य चुनाव के पश्चात् उसे विधानपालिका में इतने अधिक स्थान प्राप्त हो जाते हैं कि अन्य सभी राजनीतिक दलों की एकत्रित सदस्यता बौनी (अल्पसंख्यक) सी हो जाती है। उदाहरण के लिए, भारत में 1935 के संविधान के अधीन किए गए चुनाव के पश्चात् अनेक प्रांतों में कांग्रेस दल विजयी हुआ और 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से 1977 तक लगातार, तत्पश्चात् 1977 से 1979 तक तथा 1989 से 1991 तक की अल्पावधि को छोड़कर, 1996 तक लगातार एक प्रधान दल रहा। फिर भी, यहां पर यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कांग्रेस की इस प्रधानता के पीछे प्रारंभ में महात्मा गांधी का हाथ रहा और आगे चलकर नेहरू वंश ने अधिकांश निरक्षर वर्ग को शब्द जैसे 'गांधी' के जाल में फंसाकर गुमराह करते हुए अपने वंशानुगत शासन को चलायमान बनाए रखा और एक दलीय प्रधानता को गति दी। अब भी यह दल इस वंशज को निरन्तरता प्रदान करके अपनी प्रधानता को स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है।

एक दलीय राज्यों का उद्गम (Emergence of One- Party States)

अनेक राजनीतिक दलों की उत्पत्ति हम उन राजनीतिक व्यवस्थाओं में देखते हैं जहां उदारवादी विचारधारा पनपती है। लोकतंत्र में जहां लोगों को समुदाय बनाने का अधिकार है वहां अनेक राजनीतिक दल उभरे है ताकि वे राजनीतिक शक्ति प्राप्त कर सकें। यह सर्वविदित तथ्य है कि स्वतंत्रता से पूर्व विकासशील देशों में अनेक राजनीतिक दल होते हैं। उनमें से कुछ राजनीतिक दल स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते है और इसमें उन्हें लोगों का भरपूर सहयोग मिलता है। इन्हें आगे

विदेशी ताकतों से स्वतंत्रता छीनने के पश्चात् उसी दल के नेतृत्व को, स्वतंत्र वातावरण में सरकार गठित करने हेतु लोगों से भरपूर सहयोग मिलता है। उस दल को विरोधी दल को कुचलने या भगाने के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता। लोगों की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए केवल चुनाव में भाग लेना पड़ता है।

तनज़ानिया में 1965 की अन्तरिम सरकार ने यह प्रावधान किया कि सभी राजनीतिक गतिविधियां दल की धारा 3(3) के अंतर्गत की जाए। दो अंग्रेजी उपनिवेश- टांगानिका तथा ज़ांज़िबार के अधिमिलन से तनज़ानिया उत्पन्न हुआ। 1965 से 1985 तक जूलियस नैरेरे ने अपनी स्थिति को राष्ट्रपति के रूप में बनाए रखा। उन्होंने राज्य को धर्मनिरपेक्षता तथा लोगों को समाजवादी अर्थव्यवस्था प्रदान की। तनज़ानिया प्राथमिक रूप से एक कृषि प्रधान देश है और देश के सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product GDP) का 50% कृषि अर्थव्यवस्था से उत्पन्न होता है। 1967 में तनज़ानिया के नेतृत्व ने लोगों को समाजवाद तथा आत्म-निर्भर बनाया। और इसी कारणवश अनेक चाय व काफी के बागानों का राष्ट्रीकरण भी किया गया।

तनज़ानिया में तानू (TANU) का युवा लीग (TANU Young League) नव दलीय व्यवस्था की जड़ बनी। कुछ ही दिनों के अंतराल में नैरेरे ने एक तनज़ानिया लोक प्रतिरक्षा सेना (Political Commission People's Defence Forces) को नियुक्त किया जिसमें तानू दल का युवा वर्ग भी शामिल था। उसके पश्चात् 'एक दलीय राज्य' की स्थापना के लिए नैरेरे ने एक आयोग को नियुक्त किया। चुनाव में केवल एक राजनीतिक दल ने भाग लिया और लोगों के पास कोई विकल्प नहीं था। 'एक दलीय राज्य' को 1967 की अरूशा घोषणा में परिभाषित किया गया था। अरूशा घोषणा की विचारधारा को उजामा (Ujamma) अर्थात् परिवारवाद (familyhood) घोषित किया गया। 1977 में दोनों तानू तथा ASP (अफ्रो शिराज पार्टी–Afro Shiraz Party) को मिलाकर चामा चा मापिनदुज़ी (Chama Cha Mapinduzi-CCM) को जन्म दिया गया। अब सर्वोच्च नियंत्रण CCM के हाथों में आ गया। संपूर्ण अर्थव्यवस्था, कृषि तथा उद्योग धंधे राज्य के नियंत्रण में आ गए। संचार को भी CCM के नियंत्रण में रखा गया।

इस प्रकार हम देखते है कि लगभग सभी विकासशील राज्यों में जहां 'एक दलीय राज्य' व्यवस्था स्थापित है वहां वास्तव में एक बड़ा शासकीय दल सैनिक ताकत द्वारा अन्य दलों को कुचल देता है। इन विकासशील देशों ने हाल ही के दशकों में स्वतंत्रता प्राप्त की और उन दलों ने जिन्होंने अपने करिश्माई नेताओं या व्यवसायी राजनीतिज्ञों द्वारा, अपने देश की स्वतंत्रता के लिए कार्य किया तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उसका प्रतिफल, देश पर शासन करके उठाया। चूंकि ये दल अपने देश में पहले से ही लोकप्रिय होते हैं इसलिए जनमत प्राप्त करना इनके लिए कठिन नहीं होता।

इस क्षेत्र में अगर हमें वास्तविक रुझान का मूल्यांकन करना पड़े तो यह ज्ञात होता है कि अब भी उस प्रधान दल की ख्याति को कोई विशेष ठेस नहीं पहुंची है। उदाहरणार्थ, तनज़ानिया में एक दलीय शासन का अंत 1992 में हुआ जब राष्ट्रपति मिवनयी (Mwinyi) ने संवैधानिक संशोधनों को स्वीकृति दी। इस संवैधानिक कदम ने तनज़ानिया को कानूनी विरोधी राजनीतिक संगठन प्रदान किए और वे क्षेत्र, कबीले, जाति, धर्म आदि पर आधारित नहीं थे। फ्रांसिस न्यालो (Francis Nyali) को राष्ट्रपति आयोग के लिए नियुक्त किया ताकि वे एक दलीय व्यवस्था के भविष्य के बारे में जनता के विचार को जान सके और इस आयोग ने आश्चर्यजनक ढंग से रिपोर्ट दी कि लोगों ने यथा स्थिति (Status quo) की मांग की है लेकिन फिर भी सुधारों को लागू किया गया है।

अब, बहुदलीय विरोध उत्पन्न होने के पश्चात् भी ऐसा कोई प्रमाण देखने को नहीं मिलता जो यह सिद्ध कर सके कि अन्य दलों की उपस्थिति CMM के लिए एक चुनौती है। यद्यपि आर्थिक विकास कहीं भी नहीं है और वास्तव में जनता आर्थिक नियोजन से असंतुष्ट है, फिर भी राजनीतिक माहौल आश्चर्यजनक रूप से शांत है।

एक दलीय राज्यों का पतन (Decline of One Party States)

एक दलीय राज्य प्राय: सफल नहीं हो पाते। प्राय: एक दलीय राज्य विघटित होकर कुछ समय बाद अधिनायक तंत्र अथवा निरंकुशवाद (Totalitarian or authoritarian) राज्य बन जाता है। इतना ही नहीं एक दलीय व्यवस्था समय-समय पर परिवर्तित होती रहती है। एक दलीय अधिनायकतंत्र भ्रष्टता द्वारा अर्थव्यवस्था को तबाही के मार्ग पर ले जाता है। राज्य के अन्य भागों के साथ समायोजन न होने के कारण, राज्यों के विभिन्न भागों में भ्रमात्मक स्थिति उत्पन्न होती है। एक दलीय व्यवस्था, चाहे वह उदारवाद, साम्यवाद, फासीवाद या नाज़ीवाद विचारधारा पर आधारित हो, शीघ्र-अतिशीघ्र उसमें तानाशाही के लक्षण उभरने लगते हैं। परिणामस्वरूप दल तथा देश पस्त हो जाता है। इन अधिनायकवादी प्रवृतियों तथा नीतियों को लोग पसंद नहीं करते और इसलिए लोग सत्तारूढ़ दल के विरूद्ध विद्रोह करने लगते हैं। धीरे-धीरे दलीय संगठन में भी स्थिति बिगड़ने लगती है। यह सब इसलिए भी होता है क्योंकि एक दलीय राज्य विपक्ष की आलोचना को कभी सहन नहीं करता चाहे वह कितना भी रचनात्मक क्यों न हो। दलों के भीतर भी आलोचना को सहन नहीं किया जाता। एक दलीय राज्य (व्यवस्था) का सामान्य नारा 'विरोध को कुचल डालो' होता है। इसलिए ऐसा लगने लगता है जैसे सारा देश मुक्ति के द्वार पर खड़ा है और एक दलीय राज्य का विघटन तथा विखण्डन प्रारंभ हो जाता है।

उपरोक्त वर्णन को इमेन्युअल वाल्टरस्टीन (Immanuel Walterstein) ने अपने एक लेख में सिद्ध किया है कि अनेक देशों में एक प्रधान दल निष्क्रिय होते जा रहे हैं। उनकी क्रियाओं में शक्ति दिखाई नहीं देती। इस दृष्टि से इमेन्युअल वाल्टरस्टीन ने फ्रेंज फेनन के कथन को उद्धृत किया है जिसमें उसने अपने देश अलजीरिया के प्रसंग में कहा है, 'कुछ वर्षों के उपरांत, दल का विघटन स्पष्ट हो जाता है तथा कोई भी देखने वाला, चाहे वह पूरा या आधा जानकार हो, यह देख सकता है कि पूर्ववर्ती स्वरूप का अस्थिपंजर मात्र यह दल अब जनता को केवल गति शून्य बनाने का कार्य करता है', (After a few years the breakup of the party become obvious, the most superficial, can notice that the party today, the skeleton of its former self, only serves to immobilize the people.—Franz Fenon quoted by Immanual Walterstein in 'Decline of the Party in the Single Party States' in La Palombra and Myron Weinor (ed). Political Parties and Development, p. 208)।

एक दलीय राज्य के पक्ष में अनेक महत्वपूर्ण तर्क भी दिए जा सकते हैं, जैसे (i) एक दल द्वारा नियंत्रित राज्य सरकार अधिक शक्तिशाली होती है। (ii) एक दल होने के कारण राज्य सरकार, लंबी अवधि वाली योजनाओं की पूर्ति कर सकता है। (iii) इन देशों में शक्ति के लिए संघर्ष के अभाव में, देश के सुधार के लिए सरकार आवश्यक कदम उठा सकती है। (iv) एक दलीय राज्य में अनुशासन बनाए रखा जा सकता है। (v) अच्छा अनुशासित राज्य होने के कारण वह उज्जवल भविष्य को जन्म दे सकता है। प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह आर्थिक, राजनीतिक, व सामाजिक क्षेत्र ही क्यों न हो राष्ट्र भव्य रूप से विकसित होगा। परन्तु उपर वर्णित सभी तर्क बेकार सिद्ध हुए हैं और आज एक दलीय व्यवस्था कहीं भी देखने को नहीं मिलती। (चीन निरापवाद